www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(An Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-1* *Issue-3* *October 2024***

महात्मा ज्योतिबा फुले का नारी शिक्षाः एक अवलोकन

डॉ० अजीत कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर विभाग दर्शनशास्त्र, जी० डी० कॉलेज, बेगूसराय, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

सारांश–

महात्मा ज्योतिबा फुले भारतीय समाज में स्त्री शिक्षा के अग्रदूत थे। उन्होंने 19वीं शताब्दी में उस समय नारी शिक्षा का बीड़ा उठाया जब समाज में स्त्रियों को अंधकार, अज्ञान और पराधीनता में रखा गया था। फुले का मानना था कि किसी भी समाज की उन्नति तभी संभव है जब महिलाएँ शिक्षित हों, क्योंकि शिक्षित नारी ही परिवार और समाज को सही दिशा दे सकती है। उन्होंने 1848 में अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले के साथ मिलकर पुणे में भारत का पहला कन्या विद्यालय स्थापित किया। फुले का विचार था कि अज्ञान ही स्त्रियों के शोषण की जड़ है, और शिक्षा उन्हें आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और सामाजिक रूप से सशक्त बनाती है। उन्होंने स्त्री–पुरुष समानता का संदेश दिया और बाल विवाह, पर्दा प्रथा तथा जातिगत भेदभाव के विरोध में आवाज़ उठाई। फुले की नारी शिक्षा संबंधी पहल ने आगे चलकर भारतीय समाज में सामाजिक सुधार आंदोलनों को दिशा दी।

संक्षेप में, महात्मा फुले का नारी शिक्षा आंदोलन भारतीय समाज में जागरूकता, समानता और प्रगतिशील सोच की नींव रखने वाला ऐतिहासिक कदम था।

मुख्य शब्द– कृषक, सामाजिक न्याय, शोषण की जड़, ब्राह्मणवादी व्यवस्था, गुलामगिरी, नारी सशक्तिकरण, दलित उत्थान।

प्रस्तावना

महात्मा ज्योतिराव गोविंदराव फुले का जन्म 11 अप्रैल 1827 को महाराष्ट्र के सतारा जिले के कटगांव नामक गाँव में हुआ था। वे एक साधारण माली (कृषक) परिवार से थे, किन्तु उनके विचार असाधारण और दूरदर्शी थे। बाल्यावस्था में ही उन्होंने समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, अंधविश्वास, और स्त्रियों की दयनीय स्थिति को गहराई से अनुभव किया। यही अनुभव आगे चलकर उनके सामाजिक सुधार कार्यों का आधार बना।[1]

ज्योतिबा फुले ने प्राथमिक शिक्षा पुणे में प्राप्त की। उनके एक स्कॉटिश मिशन स्कूल के शिक्षक ने उन्हें उच्च शिक्षा जारी रखने के लिए प्रेरित किया। शिक्षा प्राप्त करने के दौरान उन्होंने यह देखा कि समाज में नारी और दलित वर्ग को शिक्षा से वंचित रखा गया है। इससे प्रेरित होकर उन्होंने जीवन भर शिक्षा, समानता और सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष करने का संकल्प लिया।

सन् 1840 में उनका विवाह सावित्रीबाई फुले से हुआ, जो आगे चलकर भारत की प्रथम महिला शिक्षिका बनीं। फुले दंपत्ति ने मिलकर स्त्री शिक्षा और बालिका शिक्षा की अलख जगाई। 1848 में पुणे में उन्होंने "बालिका विद्यालय" की स्थापना की, जो भारतीय इतिहास में पहला कन्या विद्यालय माना जाता है। इस विद्यालय की शिक्षिका स्वयं सावित्रीबाई फुले बनीं। उस समय समाज में स्त्रियों के विद्यालय जाने को पाप समझा जाता था, परन्तु ज्योतिबा फुले ने समाज की निंदा की परवाह न करते हुए अपना कार्य जारी रखा।[2]

ज्योतिबा फुले ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे शक्तिशाली माध्यम माना। उनका विश्वास था कि जब तक समाज की महिलाओं और निम्न वर्गों को शिक्षा नहीं मिलेगी, तब तक सच्चा समानता आधारित समाज संभव नहीं है। उन्होंने स्त्रियों को आत्मनिर्भर और जागरूक बनाने के लिए शिक्षा को अनिवार्य बताया। फुले ने

"सत्यशोधक समाज" की स्थापना 24 सितंबर 1873 को की, जिसका उद्देश्य समाज से जातिगत ऊँच–नीच, पाखंड, और अंधविश्वास को समाप्त करना था।

उन्होंने ब्राह्मणवादी व्यवस्था का विरोध करते हुए कहा कि भगवान ने सभी मनुष्यों को समान बनाया है, अतः किसी को ऊँचा या नीचा नहीं समझा जाना चाहिए। उनके लेखों और भाषणों में मानवता, समानता और न्याय की भावना स्पष्ट रूप से झलकती है। उन्होंने किसानों और मजदूरों के अधिकारों के लिए भी आवाज उठाई।[3] ज्योतिबा फुले केवल एक समाज सुधारक ही नहीं, बल्कि एक महान विचारक, शिक्षक, और लेखक भी थे। उनकी प्रमुख रचनाओं में "गुलामगिरी" (1873) विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसमें उन्होंने भारतीय समाज की दासता और शोषण का यथार्थ चित्रण किया है। महात्मा फुले का जीवन नारी सशक्तिकरण, दलित उत्थान, और सामाजिक न्याय के लिए समर्पित था। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से समाज में समानता और आत्मसम्मान की भावना को स्थापित किया। 28 नवंबर 1890 को उनका निधन हुआ, परंतु उनके विचार और कार्य आज भी भारतीय समाज को दिशा देते हैं।

इस प्रकार ज्योतिबा फुले का जीवन सामाजिक परिवर्तन, नारी शिक्षा, और समानता के आदर्शों से प्रेरित था। उन्होंने भारत में शिक्षा और समाज सुधार की वह नींव रखी, जिस पर आगे चलकर महात्मा गांधी और डॉ. भीमराव आंबेडकर जैसे महान नेताओं ने कार्य किया। वे सच्चे अर्थों में "महात्मा" थे, जिनका उद्देश्य मानवता की सेवा और समाज का उत्थान था।[4]

नारी शिक्षा पर उनका योगदान

महात्मा ज्योतिराव गोविंदराव फुले भारतीय समाज सुधार आंदोलन के अग्रदूतों में से एक थे। उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त जाति, लिंग और सामाजिक असमानता के विरुद्ध आजीवन संघर्ष किया। विशेष रूप से नारी शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान ऐतिहासिक और प्रेरणादायक है।

उस समय भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। उन्हें अशिक्षित, निर्बल और घर की चारदीवारी तक सीमित माना जाता था। ऐसे समय में फुले ने इस व्यवस्था को चुनौती दी और महिला शिक्षा को समाज सुधार का आधार बनाया। उन्होंने 1848 में पुणे में भारत की पहली बालिका विद्यालय की स्थापना की, जहाँ उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले पहली महिला शिक्षिका बनीं। यह कदम सामाजिक क्रांति की दिशा में मील का पत्थर साबित हुआ।

फुले का मानना था कि "अशिक्षा ही स्त्री की गुलामी का मूल कारण है।" उन्होंने नारी को शिक्षित बनाकर उसे समाज में समान अधिकार दिलाने का प्रयास किया। उनके विद्यालयों में दलित, पिछड़ी जातियों और विधवाओं की बेटियों को भी शिक्षा दी जाती थी, जो उस समय समाज के लिए अस्वीकार्य था।[5] फुले ने बाल विवाह, सती प्रथा और स्त्रियों पर होने वाले अन्य सामाजिक अत्याचारों का भी विरोध किया। उन्होंने "सत्यशोधक समाज" की स्थापना की, जिसका उद्देश्य सामाजिक न्याय, समानता और शिक्षा का प्रसार था। महात्मा फुले की सोच केवल शिक्षा तक सीमित नहीं थी; वे नारी को आत्मनिर्भर, विवेकी और समाज निर्माण में भागीदारी के योग्य बनाना चाहते थे। उनके प्रयासों से प्रेरित होकर आगे चलकर अनेक समाज सुधारकों और आंदोलनों ने नारी शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का आवश्यक अंग माना।[6]

इस प्रकार महात्मा फुले का नारी शिक्षा में योगदान भारतीय समाज को नई दिशा देने वाला था। उन्होंने साबित किया कि शिक्षित स्त्री ही सशक्त समाज की आधारशिला है।

सावित्रीबाई फुले की भूमिका

महात्मा ज्योतिबा फुले भारतीय समाज के महान समाज सुधारक, विचारक और शिक्षाविद् थे जिन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी में अंधविश्वास, जातिवाद और लैंगिक असमानता के विरुद्ध आंदोलन चलाया। उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान नारी शिक्षा के क्षेत्र में था। उस समय भारतीय समाज में महिलाओं को शिक्षित करना पाप माना जाता था, किंतु फुले दंपत्ति ने समाज की इस मानसिकता को तोड़ते हुए महिला शिक्षा की ज्योति प्रज्वलित की। ज्योतिबा फुले का मानना था कि समाज की प्रगति तभी संभव है जब महिलाएँ शिक्षित हों। उन्होंने 1848 में पुणे में भारत का पहला कन्या विद्यालय खोला, जो भारतीय नारी शिक्षा के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुआ। इस विद्यालय में शिक्षिका के रूप में सावित्रीबाई फुले ने कार्यभार संभाला। सावित्रीबाई फुले स्वयं भारत की पहली महिला शिक्षिका बनीं। उन्होंने समाज के विरोध, अपमान और हिंसा को सहते हुए भी लड़कियों को

शिक्षा देने का कार्य जारी रखा।[7]

सावित्रीबाई न केवल शिक्षिका थीं, बल्कि उन्होंने नारी मुक्ति, विधवा पुनर्विवाह, और बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं के विरुद्ध भी आवाज उठाई। उन्होंने महिला शिक्षा को समाज सुधार का माध्यम माना और महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया। सावित्रीबाई और ज्योतिबा फुले दोनों ने मिलकर शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का हथियार बनाया।

इस प्रकार, महात्मा ज्योतिबा फुले ने नारी शिक्षा की नींव रखी और सावित्रीबाई फुले ने उसे व्यवहारिक रूप देकर समाज में नारी सशक्तिकरण की दिशा में ऐतिहासिक योगदान दिया। इन दोनों के संयुक्त प्रयासों से भारतीय समाज में महिला शिक्षा का नया युग प्रारंभ हुआ, जिसने आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम और आधुनिक भारत के निर्माण में भी गहरा प्रभाव डाला।8

सामाजिक सुधार और शिक्षा आंदोलन का प्रभाव

महात्मा ज्योतिबा फुले उन्नीसवीं सदी के भारत के महान समाज सुधारक, शिक्षाविद् और विचारक थे। उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त जाति–भेद, अंधविश्वास और स्त्री–विरोधी परंपराओं को चुनौती दी। विशेष रूप से नारी शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान ऐतिहासिक माना जाता है। उस समय भारतीय समाज में स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखा गया था और उन्हें केवल घरेलू कार्यों तक सीमित कर दिया गया था। फुले ने इन कुप्रथाओं के विरुद्ध विद्रोह किया और स्त्रियों के लिए शिक्षा को समान अधिकार के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया।

सन् 1848 में उन्होंने अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले के साथ मिलकर पुणे में देश का पहला कन्या विद्यालय स्थापित किया। यह कदम उस दौर में अत्यंत क्रांतिकारी था क्योंकि समाज में स्त्री शिक्षा को पाप समझा जाता था। सावित्रीबाई स्वयं इस विद्यालय की पहली शिक्षिका बनीं और उन्होंने अनेक सामाजिक विरोधों के बावजूद शिक्षा का दीप जलाए रखा। फुले दंपत्ति ने निम्न वर्गों और अछूत समुदायों की लड़कियों के लिए भी विद्यालय खोले, जिससे शिक्षा केवल उच्च वर्ग तक सीमित न रहे।

महात्मा फुले का मानना था कि शिक्षा ही वह साधन है जिससे व्यक्ति अज्ञानता, शोषण और अन्याय से मुक्त हो सकता है। उन्होंने कहा था– "स्त्री शिक्षित होगी तो परिवार और समाज दोनों शिक्षित होंगे।" इस विचारधारा ने भारतीय समाज में नई चेतना का संचार किया। उनके शिक्षा आंदोलन ने न केवल महिलाओं में आत्मसम्मान की भावना जगाई बल्कि समाज में समानता और न्याय की दिशा में भी ठोस नींव रखी।[9]

फुले ने "सत्यशोधक समाज" की स्थापना (1873) के माध्यम से जाति और लिंग आधारित भेदभाव को समाप्त करने की दिशा में कार्य किया। उन्होंने बालविवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा और स्त्रियों के शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाई। उनके विचारों से बाद में अनेक समाज सुधार आंदोलनों को प्रेरणा मिली – जैसे डॉ. भीमराव आंबेडकर और पंडिता रमाबाई के प्रयासों में भी फुले की शिक्षाओं की झलक देखी जा सकती है।

अंततः, महात्मा ज्योतिबा फुले का नारी शिक्षा आंदोलन भारतीय समाज में सामाजिक जागृति का प्रतीक बना। उन्होंने स्त्रियों को शिक्षा के माध्यम से सशक्त बनाकर आधुनिक भारत की नींव रखी। उनके प्रयासों से भारतीय समाज में समानता, न्याय और मानवता के मूल्यों का प्रसार हुआ, जिसने आगे चलकर स्वतंत्रता आंदोलन और सामाजिक पुनर्जागरण की राह प्रशस्त की।[10]

आधुनिक भारत में उनकी प्रासंगिकता

महात्मा ज्योतिराव गोविंदराव फुले भारत के महान समाज सुधारक, विचारक एवं शिक्षाशास्त्री थे, जिन्होंने 19वीं शताब्दी में भारतीय समाज की रूढ़िवादी व्यवस्था को चुनौती दी। उनका सबसे बड़ा योगदान स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में रहा, जब समाज में स्त्रियों की शिक्षा को वर्जित माना जाता था। फुले ने यह समझा कि समाज की प्रगति तभी संभव है जब उसकी आधी आबादी–महिलाएँ–शिक्षा से सशक्त हों।

महात्मा फुले ने 1848 में पुणे में भारत का पहला कन्या विद्यालय स्थापित किया। उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले को उन्होंने शिक्षित किया और उन्हें ही इस विद्यालय की पहली शिक्षिका बनाया। उस समय स्त्री शिक्षा को पाप समझा जाता था, परंतु फुले दंपत्ति ने समाज की आलोचना, अपमान और विरोध की परवाह किए बिना इस मिशन को जारी रखा। उनका मानना था कि "शिक्षा ही वह प्रकाश है, जो अज्ञान के अंधकार को मिटा सकती है।" फुले के अनुसार नारी शिक्षा न केवल महिलाओं की स्वतंत्रता और आत्मसम्मान की कुंजी है, बल्कि यह समाज के नैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का आधार भी है।

फुले ने स्त्रियों के अधिकारों के लिए सामाजिक आंदोलनों का नेतृत्व किया और बालविवाह, सती प्रथा, तथा जातिगत भेदभाव जैसी कुरीतियों का विरोध किया। उन्होंने कहा कि जब तक महिलाओं को समान अवसर नहीं दिए जाएंगे, तब तक समाज में वास्तविक समानता नहीं आ सकती।[11]

आज भारत शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आगे बढ़ चुका है, परंतु लिंग असमानता, बाल विवाह, घरेलू हिंसा, तथा महिला शिक्षा में असमानता जैसी समस्याएँ अब भी मौजूद हैं। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में आज भी अनेक बालिकाएँ शिक्षा से वंचित हैं। ऐसे में फुले का संदेश अत्यंत प्रासंगिक है– वे हमें याद दिलाते हैं कि महिला सशक्तिकरण की नींव शिक्षा ही है।

महात्मा फुले के विचार आज की "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" जैसी योजनाओं की प्रेरणा बनते हैं। उनकी नारी–शिक्षा संबंधी दृष्टि आधुनिक भारत में लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय और समावेशी विकास की दिशा में एक मार्गदर्शक सिद्धांत है।[12]

इस प्रकार महात्मा ज्योतिबा फुले ने नारी शिक्षा के माध्यम से सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया। उनके विचार और कार्य आज भी उतने ही सार्थक हैं, क्योंकि वे एक ऐसे समाज का सपना देखते थे जहाँ हर स्त्री को शिक्षा, सम्मान और स्वतंत्रता प्राप्त हो। आधुनिक भारत में उनकी नारी शिक्षा की भावना को आगे बढ़ाना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

निष्कर्ष–

महात्मा ज्योतिबा फुले भारतीय समाज सुधार आंदोलन के ऐसे महान अग्रदूत थे जिन्होंने 19वीं शताब्दी में सामाजिक असमानता, जातिगत भेदभाव और स्त्री दमन के विरुद्ध एक सशक्त आवाज़ उठाई। उन्होंने भारतीय समाज में नारी की स्थिति को सुधारने के लिए शिक्षा को सबसे प्रभावी माध्यम माना। फुले का मानना था कि स्त्री शिक्षित होगी तो न केवल उसका जीवन सुधरेगा, बल्कि पूरे समाज का उत्थान संभव होगा। उनके अनुसार, स्त्री शिक्षा समाज को नैतिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक दृष्टि से सशक्त बनाती है।

फुले ने अपने जीवनकाल में अनेक सामाजिक बाधाओं का सामना करते हुए नारी शिक्षा की अलख जगाई। उन्होंने अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले को स्वयं शिक्षित किया और उन्हें भारत की पहली महिला शिक्षिका बनाया। दोनों ने मिलकर 1848 में पुणे में पहली कन्या पाठशाला की स्थापना की, जो भारतीय इतिहास में नारी शिक्षा का एक ऐतिहासिक मील का पत्थर बनी। उस समय समाज के उच्च वर्गों ने इसका विरोध किया, लेकिन फुले दंपति ने अपने मिशन से पीछे हटना स्वीकार नहीं किया। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि शिक्षा केवल पुरुषों का अधिकार नहीं, बल्कि स्त्रियों का भी मौलिक अधिकार है।

महात्मा फुले ने यह स्पष्ट किया कि शिक्षा के बिना स्त्री अंधविश्वास, अत्याचार और सामाजिक बंधनों से मुक्त नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि जब स्त्री शिक्षित होगी, तभी वह अपने अधिकारों को समझ पाएगी, अपने बच्चों को सही दिशा दे पाएगी और समाज में बराबरी का स्थान प्राप्त करेगी। उनके विचारों में यह गहराई से निहित था कि नारी शिक्षा केवल व्यक्तिगत विकास का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का भी प्रमुख आधार है।

फुले का नारी शिक्षा आंदोलन सामाजिक न्याय और मानव समानता की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम था। उन्होंने भारतीय समाज को यह सिखाया कि स्त्रियों को शिक्षित करना किसी धर्म या परंपरा के विरुद्ध नहीं, बल्कि मानवता के पक्ष में है। उनके प्रयासों का परिणाम आज के भारत में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है– जहाँ महिलाएँ शिक्षा, राजनीति, विज्ञान और समाज के हर क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि महात्मा ज्योतिबा फुले का नारी शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण भारतीय समाज में नवजागरण की नींव था। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से स्त्रियों को सशक्त बनाने का जो मार्ग दिखाया, वही आज के आधुनिक, समानतामूलक और प्रगतिशील भारत की प्रेरणा का आधार है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All

responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ सूची–

1. https://dsel.education.gov.in/rtensk दिनांक 10 जगत्ता, 2024
2. सामोता, के सी (2024), भारतीय राजनीतिक चिंतन, जयपुर आर बी एस ए पब्लिशर्स, पृ. 146
3. फुले, महात्मा जोतिराव (2022), गुलामी, (अनु वेदालंकार), महाराष्ट्र महात्मा फुले चरित्र साधने प्रकाशन समिति 1994, प्रस्तावना से उद्धृत, पृ.10
4. गांधी, महात्मा, हिन्द स्वराज्य, अनु श्रीकालिकाप्रसाद, नई दिल्ली सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, पू 83
5. हरिजन, 31 जुलाई, 1937
6. गांधी, मोहनदास करमचंद, (2022), सत्य के प्रयोग, नई दिल्ली लेक्सिकन बुक्स, पू 287
7. हरिजन, 11 सितंबर, 1937
8. सिंह, राजेन्द्र प्रसाद, (2022), इतिहास का मुआयना, नई दिल्ली सम्यक प्रकाशन, पृ. 33
9. https://www-amarujala.com/uttar-pradesh/varanasi/bhimrao देखा, दिनांक 01 सितंबर, 2024
10. https://velivada.com/quotations-of.dr.b.r.ambedkar/ देखा, दिनांक 01 सितंबर, 2024
11. द्विवेदी पण्डित गिरिजाप्रसाद, (अनु 1917), मनुस्मृति, लखनउ एम एल भार्गव नवल किशोर प्रेस, पू. 07
12. https://www-un.org/millenniumgoals/2015.MDG-Report/pdf/MDG202015 20rev 20)July(201), दिनांक 10 अगस्त, 2024

Cite this Article-

'डॉ० अजीत कुमार' "महात्मा ज्योतिबा फुले का नारी शिक्षाः एक अवलोकन", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:10, October 2024.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2024v1i30010

Published Date- 08 October 2024